

एतच्चोऽज्ञानततः ॥ अग्निं ह
 रतुं विप्रदक्षिणीकृत्य ॥ वा कल्प
 वेनते ॥ अग्निस्थापनमुमुहूतं
 मस्तु ॥ ॐ मयि गृह्णाभ्यर्च्यते
 अग्निं हराय येषां षायसु पृथक्
 रत्ना यस्तु वीर्या यः ॥ आमुर्देवतः
 न च नाम स्वस्ति व्याजः ॥ ॥ अग्निं
 स्थापनं ॥ ॐ स्वस्ति नो मिमंता
 नठेत् ॥ ॥ ईश्वानेमुते नो मिमंता
 नठेत् ॥ ॐ ममार्शितेन च
 शांता दयामि सोमस्वारा ॥ अग्निं
 तेनामुवस्त्राम् ॥ उरोर्ध्वरीयोध
 ररास्ते कुरीतु जयन्त नवीन
 देवामदन्तु ॥ ॥ अग्निं सम
 नं ॥ ॐ पृथ्वीदिविपृथ्वी ॥ अग्निं
 अग्निः पृथिव्याम् ॥ अग्निं
 उषधीरादिवे ॥ ॥ अग्निं

६: सह सा प षे ५ अग्निः सतो
दिवा स र्षिष्वा तु नक्तम् ॥ ॥
अग्निं प र्षिष्व ॥ अवेदादि च
तुर्वेदा सनं कु शा क्षतेन ॥ ॐ
अवेदा य इद मा सनं नमः ॥ ॐ
यजुर्वेदा य इद मा सनं २ ॥ ॐ
सामवेदा य इद मा सनं २ ॥ ॐ
यजुर्वेदा य इद मा सनं २ ॥
समिधु पत्रं धि धा य प्रत्येकं
॥ पूर्वे ५ अत गा त नं ॥ ॐ अग्नि
मीडे पुरो हितं यज्ञ स्य देवमृ
त्यु जं ॥ शीतारं रत्न धा त न ॥ ॐ
इषे तो प्रे त्वा ॥ ॐ अग्ने ५ आ
या हि वीत मे गृ हा नो रु ब्र वा
ह नै ॥ त्रि ति ता स सि व हि मि ॥
ॐ स न्ने दे वी र मि ह्य य ५ आ मे
भवतु पी त मे ॥ शं यो र मि स

वत्तु नः ॥ ॐ अवेदा य अ
ग्नि गोत्राय सोम दैवता यची
क न्य से नमः ॥ ॐ यजुर्वेदा य
भार वा ज गोत्राय ब्रह्म देवता
यतु कु न्य से २ ॥ ॐ सामवे
दा य का र्ण प गोत्राय रुद्र देव
ता य ज गती क न्य से २ ॥ ॐ अथ
र्व वेदा य वेदा न स्य गोत्राय इ
न्द्र देवता य अतु कु न्य से २
॥ द श दिग्भू जनं ॥ ॐ इन्द्राय व
रुणा य गज वाहना य सुराधि
पतये २ ॥ ॐ अश्व मे शक्ति रु
द्राय वा सा सना य तेजो वि
पतये २ ॥ ॐ यमा य दराड रु
द्राय मरिषा सना य प्रेताधि
पतये २ ॥ ॐ नैऋत्या य त्वष्टा रु
द्राय नर वाहना य राक्षसा

धि पतये ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हस्ताय मकरासनाय जलाधिपतये ॥
पतये ॥ ॐ कायके ध्वज हस्ताय
मृगकाहनाय जवनाधिपतये ॥
ये ॥ ॐ कुक्कुटाय गदाहस्ताय म
न्त्रकाहनाय कलाधिपतये ॥
॥ ॐ ईशानाय त्रिशूलहस्ताय
कृष्णभासनाय सर्वभूताधिप
तये ॥ ॐ शुक्लसेवकहस्ता
य कूर्मसनाय पातालधि
पतये ॥ ॐ उग्राय कर्मण्डलु
हस्ताय हंसकाहनाय स्रगा
धिपतये ॥ ॥ श्रीगुरुय
पूजनं ॥ ॐ स्वर्गाय ॥ ॐ म
य ॥ ॐ पातालनाथ ॥ ॥ द्विस
मिधर्मि ॥ ॐ एकं ॐ कारेण
स्वहा ॥ एकं नूक्मी ॥ नू ह या
त ॥ ॥ श्रीसंमुखी करणं ॥

ॐ एषो ह देवः यदि शो नु स
र्गः पूर्वे रुजा तः सः उ ग प्र ५
प्र तः सः ए न जातः स ज निष्प
मा गाः प्रत्यङ्ग नाः ना सि द्ध तिः
सर्वं मे पुरः ॥ ॥ कुराणा गोपी
त ब्रूयोन द्वे मण्डलं सिखित ॥
ॐ ब्रह्म रो इद मा स न न सः ॥ ॐ
प्रणीता य इद मा स न र ॥ ॐ
स्वात्मा स ना य र ॥ ई ति व ल
स नं ॥ ॥ ब्रह्मा पूजनं ॥ ॐ हि
रण्य ग प्रः स म वर्त ता गो भू
त स्य जातः पति रे कः ॥ ग्रा सी
त ॥ स ना चार पृथिवी आ म
ते मां क स्को दे का य ह वि षा
वि क्षे म ॥ ॥ प्रणीत पूजनं ॥ ॐ
इदं विष्णुः ॥ त तः प्रणीत पूजनं
लेतं ॥ ॥ शुभ्र धनं ॥ दे व स्य का

॥ ॥ प्रतप्यरां ॥ ॐ प्रसुह ६
 रक्षः प्रसुह ५ अरातयोनि
 ह्यप्र ६ रक्षो निह्य प्रा ५ अरा
 तयः ॥ कुशेन संमार्जनं ॥ ॐ
 अनितितोसिसपत्रक्षिष्टा
 जिनत्वावाजेध्यायेराम्मा
 जिर्म ॥ ॥ आपः पूरतां ॥ ॐ
 आपो हि ह्यमयो ॥ ॥ ततः
 पूजनं ॥ ॐ ब्रह्मरोनमः ॥ ॐ प्र
 जापतये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवे
 भ्यो २ ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥
 प्रणीतपूजनं ॥ ॐ विष्णवे नमः
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २ ॥
 ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये २
 ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडर
 क्षितौ ब्रह्मास्थापनं ॥ ॐ आ
 ब्रह्मचासरो ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज

ने ॥ ॐ ब्रह्मरो २ ॥ ॐ प्रजापत
 ये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो २ ॥ ॐ
 ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ॐ विष्णवे २
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २
 ॥ ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये
 २ ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे ॥ ॐ प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज
 ॥ ॐ ब्रह्मरो २ ॥ ॐ प्रजापत
 ये २ ॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो २ ॥ ॐ
 ब्रह्मयज्ञानं ॥ ॥ ॐ विष्णवे २
 ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ प्रभ्यो २
 ॥ ॐ ब्रह्मराय २ ॥ ॐ प्रपापतये
 २ ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥ ॥ कुराडोत्र
 रे ॥ ॐ प्रणीतस्थापनं ॥ ॐ विष्णो
 रतमसि ॥ ॥ पुनः पूज

लभूष्येदस्युपलकृष्णाजि
नहोमद्रव्यव्रीहिपात्रादिदक्षि
णावतेका॥ ॥ नमोभुक्तां॥ ॐ
देवस्यत्वा॥ ॥ विष्वात्प्रतिआ
लंभतंस्पृशेत्॥ ॐ जो जे जो जे
तकस्रंवाजेहवामहे॥ सः
खायइन्द्रमृतये॥ ॥ पवित्रदे
दनं॥ ॐ पवित्रेस्थोवैलक्ष्मील
वितुर्वःप्रसवउत्पुनाम्यदि
देवापवित्रेतासूर्यस्यारश्मि
भिः॥ ॥ पवित्रवक्षतं॥ ॐ विः
होरातं॥ नमोपात्रेविष्वाः
य॥ ॥ ततःप्रोक्षणीपात्राभुक्ता
ं॥ ॐ देवस्यत्वा॥ ॥ प्रतर्पणं
॥ ॐ प्रत्युष्टुष्टुः॥ ॥ कुशेन
समार्जनं॥ ॐ अनिसितोसि॥
मद्रिपूरतां॥ ॐ आपोहिष्ठा
॥ ॥ त्रयोहारतां॥ ॐ देवीरापो
ऽम्रेगुवोऽम्रेप्रवोयऽइम
मद्यपुनयतायेयजपतिः
७ चोत्तयजपतिदेवयुवम॥ ॥

रुदिगारात्रये॥ ॐ युष्माद्देवता
तवत्रत्येययमिन्द्रमवृणीध्वत्रत
येपोक्षितास्थ॥ ॥ अग्निसिंचने
॥ ॐ सवितुस्त्वाप्रसवउत्पुनाम्यदि
देवापवित्रेतासूर्यस्यारश्मिभिः॥ ॥
आत्माभुक्तां॥ ॐ सवितुर्वःप्रसव
उत्पुनाम्यदिदेवापवित्रेतासूर्य
स्यारश्मिभिः॥ ॥ सर्ववस्तुपवित्री
करतां॥ ॐ देवापकर्मतोसुख
ॐ देवयज्यायेदोभुक्ताः॥ परा
जयूरिदंनस्तद्वृष्मि॥ ॥ म
संचरेप्रोक्षणीपात्रप्रतिप्रः
तातयोर्मन्त्रेविष्वाय॥ ॥ नमो
ज्येष्ठासीचरुष्ठासीसभुक्तां
॥ ॐ देवस्यत्वा॥ ॥ प्रतर्पणं
॥ ॐ प्रत्युष्टुष्टुः॥ ॥ कुशे
नसमार्जनं॥ ॐ अनिसितो
सि॥ ॥ आपोहिष्ठा
विष्वाय॥ ॐ महिनाम्योपि
वैव्रीदाऽस्यिद्वैमेदेहि॥
वृष्यस्यिकनीनकभ्येष्टुदा
ऽस्यिचक्षुमेदेहि॥ ॥

ततः च हविषा न ॥ ततः ल गत
रां ॥ ॐ नमो नमसि वि नु हि दे वा
आ शा प त्वो दा ना य त्वा व्या ना य
त्वा ॥ दी र्घा म नु प्र मि ति मा यु पि
आ न्दे वो वः स वि ता हि रा य पा णिः
प्र ति गृ ष्णा त्व दि दे रा पा णि ना
व क्तु र्वा म ही ना म्प यो सि ॥
ततः ल गति री क णं ॥ ॐ नमो दि त्तो रा
त्वा सि वि षो वे षो स्रु ज्ज्वा
द चै त्वा च क्तु र्वा प र्या मि
॥ ॥ उ द र व ले त त रा लं ति धा य ॥
ॐ नमो त्त त्वा र सि का वो वि ष
धु न दे व वी त ये त्वा ग्ना मि ॥
॥ सु रा ल सा दा य ॥ ॐ नमो रा ना
सि वा न स्य त्पः स ॥ इ दं दे वेः
भ्यो न विः ॥ ॥ सु रा ल उ द
र व ले स्या य ॥ ॐ नमो मी ष सुः
रा मि म मी ष ॥ न वि क्तु दे हि
न वि क्तु दे हि ॥ ॥ कू द नं ॥ ॐ
नमो नमि म न्द्र जि क ॥

इ ष मू र्ज सा व द त्वा ना न य ६
सं धा त ६ सं धा तं ॥ ॥ नमो
त रा लं ति धा य ॥ ॐ नमो व
ष वृ षे म सि प्र ति त्वा व ष वृ ष
वे त्तु ॥ ॥ प्र बो त नं ॥ ॐ नमो त्त
र वः प रा ल ता ५ प्र रा त यो ॥ ॥
स्या लं ति धा य ॥ ॐ नमो त ६ र
दी वा यु र्वा वि वि न त्तु ॥ ॥ न
रा ल सा भु वा रां ॥ ॐ नमो वः स
वि ता हि रा य पा णिः प्र ति गृ
ष्णा त्व दि दे रा पा णि ना ॥
॥ ॥ किं चि त्त रा लं ति धा य ॥ ॥ नमो
वे भ्यः सु म्प्र ॥ ॥ नमो नम्य दी
ति र उ द त रा लं ति धा य ॥ ॥ ततः
पू षा पू ज नं ॥ ॥ नमो नम्य दी
का पो द ल जो द चि त्त रा लं ॥ ॐ
र द्रा य त्वा यु र्वा प्रो द्वा मि ॥ ॐ
पौ षे त्वा यु र्वा प्रो द्वा मि ॥ ॥ नमो
र म न्ये जो त्वा री ति धा य ॥ ॥

पुनः चरुस्थाली पूजनं ॥ ॐ शो
तमाय नमः ॥ ॐ भट्टा जायरा ॥
ॐ विष्णुमित्राय नमः ॥ ॐ जमदग्नि
ये नमः ॥ ॐ वसिष्ठाय नमः ॥ ॐ कश्यप
पाय नमः ॥ ॐ अत्रिने नमः ॥ ॐ बृहस्प
ते नमः ॥ ॐ विश्वामित्राय नमः ॥ ॐ सदाशिवाय नमः
॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥ ॐ प्रजापते नमः
॥ ॐ देवानाम्यो विष्णुः ॥ ॐ आरुणाक्षि
परितावभूवा ॥ यत्का मा सो जु
हमस्य सोऽस्य सुवस्य ॥ ॐ स्वा
मपतयोरपीताम् ॥ न विन
रुहीत्या ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
चरुस्थाली प्रति कु रात्र सुवि
शयनं ॥ ॐ इषे त्वो ज्येत्वा ॥ ॥
कुलीनाव ज्योतिनं ॥ ले अरणा
य ॥ ॐ गारुड हंता ॥ ॐ सुप
ते ताऽस्य स गृह्णा ॥ ॐ सिवे दि
नमः ॥ यो रूपाणि प्रति मुञ्च

मानाऽप्रसूयाः सन्तः सन्तः सन्तः
चेरति ॥ पशुपुरी निपुरी ये म
रुत्पतिर्यो लोका न्यनुदा
त्तस्मा ज्योतिः ॥ ॥ यथा मि
करां ॥ ॐ तस्मिन् दस्य सति षष्ठं
वसो मन्दान प्रसूयः ॥ ॥ अभिवृत्त
ने ससरेऽस्य येन वऽईन्द्रा मिन
दा महे ॥ ॥ ॥ अकदर्वी प्रनयरां
॥ ॐ प्रभुक्षरां ॥ ॐ देवस्यत्वा ॥ ॥ प्र
तर्परां ॥ ॐ वातार मिन्द्र प्रवितार
मिन्द्रऽहवे हवे सुहवऽह्वर मिन्द्र
म् ॥ ॐ यामि राकं मरु हन मिन्द्र
ॐ स्तुति नो मद्य वा यो न्निन्द्रः ॥
॥ ॐ देवा ज्योतिर्देवता ॥ ॐ दिवा चरु
मारी इतं ॥ ॐ इषे त्वो ज्येत्वा ॥ ॥ कु
रायु मेरा ॥ ॐ ग्यो प्रवचनं ॥ ॐ सु
वनं ॥ ॐ सुवनं च ॥ ॐ सवितु स्तुता
सवः ॥ ॥ ॐ आत्मा भुक्षरां ॥ ॐ देव
तुर्वः प्रसवः ॥ ॥ ॐ ग्यो देवता ॥

पवित्री नानरहितः॥ अज्यवरला
मुत्तरतः॥ ॐ ते जो सि मु॥ ॥ प्रोक्ष
णी संस्कारं पूर्णवत्॥ ॐ पवित्रे स्थो
॥ उदकेन पूरणां॥ ॥ त्रयोद्वारण
॥ ॐ देवीरापोऽम्रे शुकोऽम्रे पु
कोऽम्रे ममयलं न यता मे यत
मतिः॥ सुष्मातुं यत पतिं देव युवं
॥ ॥ हृदि ता रा च यं॥ ॐ पुष्पां उद
प्रोक्षणी तदुत्तरये प्रोक्षिता
मवृणी ॥ ॐ वृत्तये प्रोक्षिता
स्थः॥ ॥ प्रोक्षणी क्षणां॥ ॐ अम
येत्ता जुष्टं प्रोक्षणी क्षणां
॥ ॐ प्रोक्षणी क्षणां॥ ॥ सर्व
प्रोक्षणी॥ ॐ कृष्णो म्माखरे को
मयेत्ता जुष्टं प्रोक्षणी क्षणां
सिद्धिं हि मेत्ता जुष्टं प्रोक्षणी क्षणां
हिरसि शुभ्यः स्तुता जुष्टं प्रो
क्षणी॥ ॥ प्रोक्षणी क्षणां
क्षिणी क्षणां॥ ॐ ऐषो हृदेवः प्र
विज्ञो नुमर्षः पूर्णो ह जातः स

उत्तराक्षः॥ सः॥ सः॥ सः॥ सः॥
जातः सज निष्प्राप्तः पुत्र
५ जना सिद्धि सर्वतो मुख
॥ ॐ अदित्ये बुद्धनमसि विष्णो
स्तुते स्तुतां प्रदत्तं स्तुतां
सिद्धि सत्त्वा देवे भ्यो ॐ भूतं प
ते ये स्तुता भुवन पतये स्तुता भ
तां पतये स्तुता॥ रो बो द
कं प्रणीते निष्प्राप्तः॥ सप वि
चं च क्षात स्तुतां प्रणीते नि
ष्प्राप्तः॥ ॥ प्रोक्षणी क्षणां
प्रोक्षणी क्षणां॥ अमुक्तं नः
वेतं॥ मूलादि स्तुतां॥ ॥
चेदनादि पूजतं॥ ॐ वृत्त
रो र॥ ॐ विष्णवे २॥ ॐ
प्रायः॥ प्रोक्षणी क्षणां पूज
तं॥ ॐ वृत्तरो र॥ ॐ विष्णवे
२॥ ॐ वृत्तरो र॥ ॥ ॐ वृत्त
सिद्धिं सर्वं सर्वं तं सर्वं तं
ये स्तुता सर्वं तं सर्वं तं
वेद यः सर्वः॥ ॥ ततः ३

॥ पठ मन कुरा सा वा य ॥ त्रुते दः
री कि या सा र ते र ॥ चृते न ॥
ॐ यो निक ल ना य स्वा हा ॥ ॐ
दो न स्य यो नि र सि क्ष न स्य
ना भि र सि ॥ सा ता हि ६ सी सा
सा हि ६ सी : स्वा हा ॥ ॥ ॐ ग श्री
जा ना य स्वा हा ॥ ॐ ग श्री ५ प्र
स्यो ष ष्ठी नां ग श्री व न स्य ती
नां ॥ ग श्री वि न्य स्वा भू त स्या
ते ग श्री ५ प्रजा पति स्वा हा ॥
॥ पुं न व ना ज स्वा हा ॥ ॐ स्वाः
स्ति प श्वा म नु जे टे म स्तु र्था
य च न्द्र म सा वि व ॥ पु न द्य ष्ठ
ता य ता जा त ता सं ग वे म हि
स्वा हा ॥ ॥ ॐ स्त्री म ती न य
ना य स्वा हा ॥ ॐ सा हि र्मु र्मी
॥ ॥ ॐ जा त क र्मी रो स्वा हा ॥
ॐ का य स्वा हा क स्मै स्वा हा क त

म स्मै स्वा हा पि सा की ता य स्वा हा
म नः प्रजा प तये स्वा हा चि तं वि
हा ता या दि त्यो स्वा हा दि त्यै म हो
स्वा हा दि त्यै मृ द्दी का ये स्वा
हा म र स्तु त्यै स्वा हा म र स्तु त्यै
पा व का ये स्वा हा म र स्तु त्यै
रु त्यै स्वा हा पू र्ण स्वा हा पू र्ण
प्र प ञ्चा य स्वा हा पू र्ण नं वि
षा य स्वा हा त्व ये तुरी पा म स्वा
हा त्व ये पु रू रू पा य स्वा हा वि
ज वे स्वा हा वि ज वे नि भू य पा
य स्वा हा वि ज वे शि पि वि ष
य स्वा हा ॥ ॥ म हा मू त क
ना शा य स्वा हा ॥ ॐ त्व म ग्रे
दु मिः ॥ ॥ ॐ नि ष्पू म ना य
स्वा हा ॥ ॐ म हा य हा वी ५ प्र
न ये गि रा गि रा च द क्ष म ॥
प्र प व य म मृ तं जा त वे द स
पि यं मि त्र न ष ६ सि ष ६ स्वा
हा ॥ ॥ ॐ सु भा वे ना म

रागा य स्था हाः॥ ॐ प्राणा य स्था
 हा पा ना य स्था हा वा ना य स्था हा
 व क्षु षे स्था हा ओ ना य स्था हा क
 दे स्था हा म न से स्था हा आ ॐ फ
 व प्रा हा ना य स्था हा या त फ र सि
 नी ॥ ॥ ॐ सु नै प्रा हा ना य स्था हा
 ॥ ॐ प्र न प ते ॥ ॥ ॐ पू व सि रं
 म न स्था हा ॥ ॐ सु व रं ॥ ॐ
 डा कर हा ना य स्था हा ॥ ॐ मे रं
 नं दि को ॥ ॐ प्र रं ॥ ॐ पि या के
 न र मृ त जा त रिं ॥ क वि ६ म स्था
 ज म ति थं जी ज ना ना म म ना ना
 वं ज न य त दे वाः स्था हा ॥ ॐ क
 र्ण मे दा य स्था हा ॥ ॐ भ द्रं क र्ण
 मिः श्रु त या म दे वा भ द्रं प ले य मा क्ष
 मि र्थ ज नाः ॥ स्थि रै र दे मृ द्वा
 ॐ स स रू मि र्थ ले म ह दे व हि तं
 य वा युः स्था हा ॥ ॥ ॐ व्र त व क्ष
 ना य स्था हा ॥ ॐ व्र तं क र्ण त व्र तं

क र्ण त मि र्थ हा मि र्थ हो व न
 ल्य मि र्थ दि यः ॥ दै वि मि र्थ म
 ना म दे मृ द्वा का म मि र्थ ये व
 र्णं यं यं श्रु त म ६ मृ ती र्थं न
 अ स द से स्था हा ॥ ॥ ॐ गा य ती
 प्रा हा ना य स्था हा ॥ ॐ व्र ते न दी क्षा
 मा प्रो ति क्षि त्वा प्रो ति द क्षि त्वा
 द क्षि त्वा श्री हा मा सो ति श्री
 वृ त्त म् ॥ स्था हा ॥ ॥ ॐ प्रे ष ता
 मा न न व स्था हा ॥ ॐ उ दु तं स व
 रु त्त म् ॥ श म स द वा वं स कि म
 व्र म तं भ था य ॥ प्र था व य
 मा दि त्वा व्र ते त वा ना ग सो ६ म
 दि त्थ ये स्था म स्था हा ॥ ॐ स मा
 व्र ते ना य स्था हा ॥ ॐ श्रा क्ते ॥
 ॐ मि त्ता हा य स्था हा ॥ ॐ तं प ली
 मि र्नु ग दे म दि वाः पु रं भू ति मि
 र त वा हि र रा ये ॥ ना कं र म् ॥
 नाः मृ क्त त म्हा लो के त मि र्थ

ॐ ॥ अविरोचते दिवः स्थाहा ॥ ॥
 ॐ चतुर्थे स्थाहा ॥ ॐ अष्टकं
 य जा महे ॥ ॥ ॐ सा ता जित वि
 स ॐ ना य स्थाहा ॥ ॐ सा ते क पुत्रं
 इ धि की पुरी ष्य म त्रि ६ स्त्रि यो
 ना ठ भा रू षा ॥ ता मि श्ले द्दे वे ऋ
 तु मिः सं वि दानः प्र जा प ति वि ष्व
 क म्मी वि सुं च त्वा हा ॥ ॥ ॐ स
 म्पु री क र रा ग य स्थाहा ॥ ॐ ए षो
 रु दे वः प्रा दि शू नु स र्वाः पू र्वो ह्मा
 तः स ३ उ ग म् ३ उ प्र तः ॥ स ३ ए
 व जा तः स ज नि ष्य मा नः प्र त्य ह ज
 ना स्ति ष ति त र्व तो मु त्वा हा ॥
 ॥ ॐ अ म न जा त यो स्थाहा ॥ ॐ वि
 श्वे त श्वे कुरु त वि ष्व तो मु र्वा
 वि ष्व तो वा ह र त वि ष्व त स्या
 त ॥ स स्या ह स्या च स ति स म्प त नै
 र्वा वा भू मी ज न य न्दे व ३ एकः स्था
 हा ॥ ॥ ॐ प्र ति षा यो स्थाहा ॥ ॐ

मनोज्ञतिर्जुषता माज्यस्य नृ
हस्पतीयं तमिमन्तनोत्तरिष्ट
यवः समिमन्तनोत्तरिष्ट
सः इह मादयन्तामिहं प्रतिफलम्
ता ॥ ॥ ततोऽग्रे प्रानं ॥ ॐ प्रेण
रुठः प्रदीपार्चिः शक्तिरुक्ते
रुता तनः ॥ कुराडा कारे द्विक्क
श्वे प्रज्वलित्वा वक्युतिः ॥ संप्र
वर्गभवे जिह्वा श्रुत श्रुतुदा
रोकरे ॥ स्थापनती स्थिता नाप्रे
प्रागदशान्तिकारकः ॥ ॐ स
प्रयेव्यानपुष्पं नमः स्थापन ॥ प्र
ष्टणदशमसिद्धमादाय ॥ ॐ स
सिद्धाग्निन्दुवस्यतस्तुतेर्वैष्ण
ययतातिथिम् ॥ प्राप्तिरुव्यावृ
त्तिनन ॥ ॥ चोदपंजुरुदात्त ॥ ॐ
तदेवाग्निस्तदादित्यस्तदा युक्ता
दुक्कनुमाः ॥ तदेव श्रुक्तं तदुक्तं ता
प्रापः संप्रजापतिः स्थापन

दमहत्तं बल गमुक्तिरामि यमे
 समानो यम समानो निचखाने
 दमहत्तं बल गमुक्तिरामि यमे स
 वन्द्युय्यमसर्वमुक्तिचखाने दम
 हत्तं बल गमुक्तिरामि यमे सजा
 तो यम सजा तो निचखानोत्क र्मा
 मि रामि ॥ ॥ दीप ॥ ॐ ते जो सि ॥ ॥
 जलाक्षते वलि ॥ ॐ सुधु बो ज
 दधिवक्ता पुष मो दे यो मि षक ॥
 मतकताड जा नत्या य ॥ स गुरा धि
 य ॥ प्रति का ॥ सुधा य ॥ ॐ का राडा क
 राता तुरी ह ती प रुषः प रुष स्य रि
 ॥ र वा नो ह वै प्रत नु स ह लो रा ण
 तेन च ॥ ॐ दी प्ति युक्ता य वला यत
 र्च मे ॥ सुप्रभा त्ता य स ह मा सुधो
 जीवः शरद शतम् ॥ ॥ ततः स्ना
 नं कारयेत् ॥ पूजानुक्त म क लः
 शैव स्नापयेत् ॥ पू र्वा दि क ल
 मो द क शं विष्णु को सुविधि न

कारणादेवस्नानं कारयेत् ॥ अथ
चतुस्त्विति ॥ ॥ वायुविशेषतः ॥
ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॥ फलप्रतिष्ठा
का ॥ ॐ छाः फलितरी ॥ ॥ लाजा
॥ ॐ नवजविष्णु ॥ ॥ इक्ष्वाकु ॥
ॐ दिव्या पुष्पाय ॥ ॥ देवस्य मू
लमंवे रणं शतं तास ह सां ॥
कमराडलु पां लेज तं पातयि
त्वा स्नापयेत् ॥ अथ पात्रोद
केनाभ्युक्ष्यताम् ॥ अथ जोहि
षा ॥ ॥ इति देवस्नानवि
धिः ॥ ॥ ततो विश्वकर्मा पू
जितं ॥ ॐ विश्वकर्मा शोडश
सासनं ॥ पुष्पं ॥ एवं नन्द
नसिन्दूरपत्रोपकीनपुष्पं
॥ ॥ इक्ष्वाकु ॥ कञ्जलसिद्धि
कालसाविम ॥ ॥ मिखाक
नके ॥ ॐ शुभनिवृत्तमह

च चरत्तं परितः स्तुतः ॥ रोच
ने रोचनादिविः ॥ ॥ वस्त्रेण
देवसाद्यादयिन्वा ॥ चन्दन
सिन्दूरमगुणाणी ॥ यदि ॥ मे
फलातिप्रतिष्ठा ॥ ॥ मूल
वार्थे रणार्थं नाभ्युक्ष्य ॥ यजमा
नेन तां जापयेत् ॥ ॥ गिरि
का लेन देवस्थानां विधि
ने भलं माय नमराडपत्रि
भ्रासणिवा यद्रासने स्था
प्य ॥ ॥ ततो त्रितन्त्रो
पनं ॥ ॐ भूः स्वाहा ॥ ॐ वृ
क्षयदानं ॥ ॐ भुवः
स्वाहा ॥ ॐ इदं विष्णुः ॥
ॐ तः स्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय
वे ॥ ॥ वायु ॥ इति त्रितन्त्रो
पनं ॥ ॥ अथ देवदशभिर्भाका

रघेन॥ॐ योनि क लना यस्या॥
ॐ क्षयस्य योनि रमि क्षयस्य ना
मिरमि॥ मन्त्रा हि ६० मिश्रा मा
हि ६० सिः स्था हा॥ ॥ च तेन॥
ॐ अनुप्रदाना यस्या हा॥ ॐ व
स तेन॥ अनुना देवा व स-सि
नाः॥ रथं त रेणा ते जमा ह विरि
त्रे व यो दधुः स्था हा॥ ॥ ॐ की
र्ष्य प्रदाना यस्या हा॥ ॐ हे तो म
त्रे विजय हा ति यो निं प्र वि श
ति दि द्रियं गा भोजन पुणा कृत
उत्सर्जना ति ज स तां स्था हा
॥ ॥ ॐ रक्षा प्रदाना यस्या हा॥ ॐ
न ज विष्णु दा॥ ॥ ॐ गभा ध्या
ना यस्या हाः॥ ॐ गभी रं यस्या
॥ ॐ गभी रं यस्या ॥ ॐ गभी रं यस्या ॥
॥ गभी रं यस्या ॥ ॐ गभी रं यस्या ॥
॥ गभी रं यस्या ॥ ॐ गभी रं यस्या ॥
ॐ पुं गभी रं यस्या हा॥ ॥

ॐ स्था ति पथा मन्त्रे र मन्त्रा
य च द मन्त्रा विहा॥ पुनर्द यना य
ता जानता मन्त्रे मन्त्रा हा॥ ॥
ॐ शी मन्त्रे न यना यस्या हा॥ ॐ
मन्त्रा हा॥ ॥ ॐ जान क
मन्त्रे रो स्था हा॥ ॐ का यस्या हा
॥ क ल्पे स्था हा॥ क त मन्त्रे स्था हा
॥ स्था हा वि मा धी ता यस्या हा
॥ नमः प्रजा पतये स्था हा॥ चि
त्रं विना ता य दित्ये स्था हा॥ दि
त्ये मन्त्रे स्था हा॥ दित्ये मन्त्रे
डी को स्था हा॥ मन्त्रे मन्त्रे जा व
का यस्या हा॥ मन्त्रे मन्त्रे ह मन्त्रे
स्था हा॥ पू र्णे स्था हा॥ पू र्णे प्र
पथ्या यस्या हा॥ पू र्णे न र स्था हा
यस्या हा॥ न्ये स्था हा॥ न्ये न
री पा यस्या हा॥ न्ये पु र्ण र्ण
पा यस्या हा॥ विष्णु र्ण स्था हा॥

विष्णवे नि भूय पाय म्हा हा ॥
विष्णवे नि वि वि ष्टा य म्हा हा
॥ ॥ वसु उ ले ॥ कु श न ता ही
दे द न ॥ ॐ दु प दा दि व ॥ ॥ ए
ष्ठा क ल शा भि षे क ॥ ॐ दे
व स्य न्वा ॥ ॥ ॐ स द्वा स न
क न शा य म्हा हा ॥ ॐ न म
गे द्यु मिः ॥ ॥ शु चि जो र ता
ग्वा ले ख य म्हा हा ॥ ॐ लि पि चा
न य ॥ ॐ नि पू म ता य म्हा हा
॥ ॐ य ता य ता को ५ शु भ मे
गि रा गि रा च दे क्ष मे ॥ प्र पु व
म स मृ तं जा त वे द सं पि यं
मि त्त न ॥ ६ ॥ सि ष ६ ॥ म्हा हा
॥ ॥ पु त्रा ला शा व पा ६ स
त हो म के ॥ ॥ ॐ द्यु न प्रा
श नं ॥ ॐ द्यु न प्रा श ना म

म्हा हा ॥ ॐ ते जा सि ॥ ॥ नाम
कर रं ॥ ॐ नाम कर रं य म्हा
हा ॥ ॐ प्रा रा य म्हा हा ॥ पा ना
य म्हा हा ना य म्हा हा ॥ च क
षे म्हा हा श्री ना य म्हा हा वा वे म्हा
हा स न से म्हा हा ॥ ॥ य था दे व
या ये ल न ना म नो या वि य ॥
॥ ॐ फ ल प्रा श ना य म्हा हा ॥ ॐ
याः फ लि ती ॥ ॥ सि प ति ति
न्वा ना स व ने न य ॥ ॥ ॐ म्हा
ने प्रा श ना य म्हा हा ॥ ॐ म्हा
न प ते ॥ ॥ च रु शा ना ना प
च ग्रा म ना य के ॥ ॥ ॐ नू
डा क र ना य म्हा हा ॥ ॐ म्हा
नं दि के ५ शु भ ति पृ थि न ना ना
मा म ना वा नं ज न य न दे वाः
म्हा हा ॥ ॥ लु यो ल न म्हा
ये के ॥ ॥ ॐ क र ना म्हा हा

यस्याहा ॥ ॐ मद्रं कर्णाभिः
एतु घामदेता मद्रं परोमाक्षमि
यजिजाः ॥ स्थिरै रं भै मद्रं
वा ॐ मद्रं नुभिः यो मद्रं
वहिनं यदा पुः मद्राहा ॥ ॥ लु
मुलुन रु सपत प्यारुते ॥ मद्रं
परगितय ॥ ॥ ॐ वनवन्धना
यस्याहा ॥ ॐ वनं कर्णतु तं
कृणुतामिर्ब्रह्माणिर्ध्याता
वनस्यातिर्ध्यातियः ॥ दैवी धि
यमनामहे सुसुदी काम
मिष्टयेव वी ॥ ॐ यद्वताहम
६ मुनि ॥ ॐ नो ॥ सुमहमेसा
हा ॥ ॐ वनि विम ॥ फराति न
य ॥ ॐ वनार सिद्रम विनार
सिद्र ६ रुवे सुह ६ मद्र

सिद्रम ॥ मद्रा मि शक्रं पुह
रुने सिद्रं मद्रा नो मद्रा वा
ध्यानिद्रः स्याहा ॥ ॥ गाय
त्री प्रदानं ॥ मद्रं मद्रं नो ॥
नयाना जो नानको बाधे के ॥
ॐ गायत्री प्रदानाय स्याहा
॥ ॐ वने नदी धामा प्रोतिदी
ध्या प्रोतिदक्षिणाम् ॥ दक्षि
णा मद्रा प्रोति मद्रा
सत्यमायने स्याहा ॥ ॐ म
मा वनं ना यस्याहा ॥ ॐ
मद्रा कृष्णेनी ॥ ॥ विनाहा ॥
ॐ विनाहा यस्याहा ॥ ॐ
तस्य न्री मिरनुगधे मद्र
वीः पुत्रै म्रित मिद्र न काहि
रुगेयः ॥ नार्क ग मद्रा नाः सु
हते मद्रा लोके नो यो पृष्ठ

ॐ सुविरोचने दिवः स्वाहा ॥ म
धुप कस्तूरने तपः ॥ कुशति
लं शिवा ॥ ॐ सुद्युता राह
॥ सुद्यादि ॥ यजमानस्या मुको
देशा मुक देवा यमु मुकी कन्या
स प्रद दे ॥ दक्षिणा ॥ ॥ शतवृ
न्द का फ निनिस लानं व्या य ॥
ॐ पु जाप ते न न्वदे ता न्य न्यो वि
न्या रुपा शि परि ता व भू व ॥ य
न्या मा सो जु ह म स न्यो ॥ सु
स्तु व य ६० ॥ स्या म प त यो र्या
गां ॥ ॥ शतवृन्द का न को र्ना म
के ॥ ॥ गुरु स्ते ती ॥ ॥ लवि
भा ॥ फ र्ति नि द्या ये ॥ ॐ आ ता
र मि त्र म वि ता र मि त्र ६० ॥ हवे ह
वे सुत व ६० ॥ मूर मि त्र म ॥ ॥ फ र्मा
मि श कं पु र ह त मि त्र ६० ॥

सि नो म द्य ता का न्वि ३ ॥ ॥
मा स ये डे ये डे या ये ॥ आ हो
र म न म भ्मान म र मे व न्व ६
स्थि रो भ व ॥ अ भि ति कृ प त
न्य तो व वा ध म्भ प त ना म सः
॥ ॥ पु सा द पि ति ति ते ॥ ॐ पु
जा प ते न न्वदे ता न्य न्यो वि
न्या रुपा शि परि ता व भू व ॥ यः
न्या मा सो जु ह म स न्यो ॥ अ
स्तु व य ६० ॥ स्या म प त यो र ना
म ॥ ॥ जो हा मा न गा वे ॥
ॐ न व वा यो वृ ह स्प ते न्व द्य
अ मा त र भु त ॥ अ पा ॐ स्या
वृ णी म हे ॥ ॥ लु की त न ति
ने के ॥ ॐ हि रा य ग क र्मः स
म व र्त्त ता गे भू त स्य जा त
प ति र क मी त् ॥ स दा ध्या
र ॥ वि वि द्या मु ते मा क स्ते

देवाय नमः विष्णवे नमः ॥ ॥
वाङ्मनस्यके ॥ ॥ अनितिनवा
ये ॥ ॐ नमः शंभवाय च ॥ ॥
वायेभराडी ह्यनेतयो ॥ ॐ
मातृपितृविस्मृताय नमः
हा ॥ ॐ मातेव पुत्रं पुत्रिणीपु
शकापतिः ॥ स्वेयो नाव
भारुबा ॥ नासि चैदेव
मृत्तुभिः संविदानः पुजा
पतिर्विचक्रमाधिपुत्रं
नुस्वाहा ॥ ॐ वनं पुण्यं
हा ॥ ॐ सुप्रकजं जाम
हे ॥ ॐ प्रतिष्ठाप्यैस्वा
हा ॥ ॐ मनोज्ञं नित्यं
माज्जम्यवृहस्पतिर्ध
नमि संततो नमि संत

२४
नमः समिपदजातु ॥ वि
श्वेदे सः ह्रस्वा दयं ता
मौं हं प्र ति द्वा स्वाहा ॥ ॥
इति देव शक्तिः ॥ ॥ त
तो यथा देवस्य जीवन्मासः ॥
कुशतिलजलं गृहीत्वा ॥
अद्यादि वा नमः ॥ यथा देव
स्य जीवन्मासमहं करिष्ये
॥ ततो देव शोभो नं कार
येत् ॥ ॐ शिवतलाधिपत
ये स्वाहा ॥ ॐ नमः शंभवाय
च ॥ शिहमि ॥ ॥ इति ॥ विष्ण
तलाधिपतये स्वाहा ॥ ॐ
इदं विष्णुः ॥ ॥ नाभौ ॥ ॐ
आत्मने तलाधिपतये स्वा
हा ॥ ॐ ब्रह्मवदानं ॥ ॥

ॐ ह्रीं श्रीं आपते जो वाया
कातलाय म्याहा ॥ ॐ शि वो
नामा सि म्य धि ति नो पि ता
नमस्तो ॥ अस्तु मा मा हि ६० श्रीः
॥ निवर्त यो म्या युषे त्राद्या य
पुजनता य रा य म्यो बाय
मुपजा म्ना य मुवी यी य ॥ इ
ति तत्त्व मो चनं ॥ ॥ ततो षडं
गेन शो धनं ॥ इति ॥ ॐ यथा
गुणो दुरमुदै व तदु मुपस्य
त न निः ॥ दूरदु प्रभुयो
निषि यो नि रं कं न-मम
नः शिव मङ्ग ल्य मस्तु ॥ ॥
शिरसि ॥ ॐ मह म्म शी ॥ नि
रता ॥ ॐ अ यः संभृतः

पुत्रि हो र सा च्च विश्व कर्म
राः समवर्त ता नो ॥ तस्य च्च
दृष्टा विद च्च द्रु प मे तित-मर्त्य
स्य देवत्व प्रो जान मग्ने ॥ ॥
कवच ॥ ॐ आभुः शि रा नो
वृष भोन भी मो द्य ना द्यनः
क्षे भ शा म्य र्ष शी ना म् ॥ रं
ऊद नो गि मि ष ५८ कवीरः
सत ६० मे ना ५ अ ज य म्मा क
मि न्द्रः ॥ ॥ तेज ॥ वि त्था ह
रु मि व नु मो प्य म य
इ च्च य न प ता व ॥ त म्
॥ वा त्म नो यो ५ अ र्ध रक्ष
ति म्म ना प्य जाः पु वो ष पुरु
धा वि राज ति ॥ ॥ अ ह्ये ॥ ॐ
नमस्तो रुद्र म न्य व ५
तो न ५ इ ष वे न मः ॥ ॥

वा रु भ्या सुतते नमः ॥ इ
त न ५३० शो धे नं ॥ ॥ त
त प्रा रा प्र ति द्य ॥ ॐ अ म्भ
प्रा रा प्र ति द्य म च म्भ व
स वि द्य रु द्र अ ष षः अ
ग्य रुः सा मा नि द्वा मि
चि द्वा पा प्रा गो त कि दे व
ता ५ मु क दे व म्भ प्रा रा प्र म्भ
प ने नि ति यो गः ॥ ॥ ॐ
आं ह्रीं क्रीं वं रं वं वं रं
षं मं हं मो हं हं सः आं
ह्रीं क्रीं भ मु क दे व म्भ प्रा
रा इ ह स्थि तः आं ह्रीं क्रीं
भ मु क दे व म्भ जी व इ ह
स्थि तः आं ह्रीं क्रीं भ मु
क दे व म्भ स र्वे ति मा मि व

अ न भ व रुः ओ न द्या प्रा ना
इ हा ग म्भ सु र्वे ति द्य रु द्वा
हा ॥ त तो दे व म्भ सु ले न श
त म्भ स ह म्भ म्भ द श म्भ
शो ध ये त् ॥ ॥ दे व म्भ सु
ल म च्चे शा रु तिं ॥ ॥ ला
जा स ह पू शा रु ॥ ॐ पु रा रु
र म्भ वि द्य पो वि र पु तिं
व द पा ष ष ति वि श्री व द
न म्भ ॥ धा मे र यं अ न्द्र म्भ
मि द्य धा मि द्य म्भ सु की रा
मो ५ अ न्द्र दि श्म य ज ते ॥
प्रो अ शा रा मा द धा द ष
तो व जो सि म्भ हा ॥ प्र
नि द्य ॥ ॥ जी व ति के

ने मन्त्र ॥ ॐ प्राणा न्ये हि न
 आजीवं आमुर्दे हि सु तं
 क्तां ॥ विद्या तान सु खं दे
 हि दे हि मे लघु सांप्रतं ॥ ॥
 यथा सक्ति त पं को प चाहे
 देव पूजनं ॥ यान् कं जति
 रूप दी प तै वेद्य जपस्तो
 त्र दक्षिणा अथ गन्धादि ॥
 इति देव पूजा ॥ ॥ अथ
 विश्वकर्मा पूजनं ॥ यज
 माते न ज्ञा भ शि उ अरो स्था
 प्य ज लेना सिंचे तं ॥ पूजा ॥
 ॐ विश्वकर्मा शो इदं सा सनं
 नमः पुष्पां ॥ एवं हस्तार्चनं
 न्यत य ज्ञो पवित्र पुष्पं रूप
 दि पंस्तो ॐ ॥ विश्वकर्मा न
 मस्तुभ्य नै लोक सृष्टि का

रक ॥ यथा पुष्पं कुरु भ्रात्र
 विश्वकर्मा नै सो लुने ॥ अथ
 गन्धादि दक्षिणा शीर्षादः ॥
 ॥ आहुति ॥ ॐ विश्वकर्मा वि
 मनाः आदिता पाप्माना विश्व
 ता परमा सह कृ ॥ तेषां विति
 सप्रिया मदति पत्रा स प
 कृष्णी नृ प रः एक माहुः स्वा
 ता ॥ इति आहुति ॥ ॥ अथ
 स्थिरं कारयेत् ॥ द्रवा चार्थे
 न श्रु वै स्पृशेत् ॥ यजमाने न
 कुशे न ॥ करमीन ज्ञा भ रक्षी
 न ॥ ॥ वाक्य ॥ भवा वा राह
 तादि ॥ ॐ यजमान स्या मुक्त
 का र्थ निमित्तं यं स्थि रो भ
 व ॥ ॐ प्रस्थितो सि देवे श सु
 प्रति ह्ये भवत्ये य ॥ सावित्रीः
 ॐ प्रति पद्यते यजमानो

सुवर्द्धये ॥ शत्रो सुदिपदे
नित्यं रात्रो सुचक्रतुष्यदे ॥
रात्रो सुसर्व लोका नां रात्रो
रात्रा च भैव च ॥ यजमानस्य
भृत्यो यं पशुपतस्य कां च वाः
॥ रक्षा तु सर्व लोका नां देव
भ्यां न सोक्तैः ॥ यावत्तु तस्य
ते मूर्ध्नि ॥ व्यजेषु वरवर्णिनि
॥ तावद्वर्ष सहस्राणि ॥ विष्णु
लोके महियते ॥ हेमरक्षप्र
दाने न पुण्यं कोटि शुभां शिवं
॥ यावत्तु नृभ्यः सुखं भवेत्
दिनी सपुत्रा गराः ॥ यावदा
काशगङ्गा च तावत्सर्वस्य
रो भव ॥ वेद ॥ ॐ ॐ ह्यिरो
भव विदुः ॥ ॐ ॐ आहुमि वेद

सर्व ॥ पृथुर्भुवः सुखं द
त्तममेः पुरिषा हनं ॥ पृ
तिष्ठा ॥ लाजा सह आहुति
॥ ॐ ॐ ॥ प्रतिष्ठा ये स्वाहा ॥
ॐ ह्यिरो भव ॥ नृभ्यः ॥ ॥
मेक आहति प्रतिष्ठा ॥ ॐ स
नो जूतिः ॥ इति देव प्रतिष्ठा
विधिः ॥ ॥ अथ सा पू
जा ॥ पदुकासनं चोकी चो
का ॥ आसना तये ॥ यजमाने
न निष्प्रद्वनं ॥ ॐ ह्यो ह
गङ्गा लगनां वैष्णवी सिद्ध
महत्तं वल गमुक्ति रमिया
ममालो निचला नेदम हं
तं वल गमुक्ति रमिया मे
सममे नो यमममानो निच
रकनेदम हं तं वल गमुक्ति
क्ति रमिया मे सर्वं च यथा